

आज मेरे बाबा ने कहा
तुम बच्चों को अपने भाग्य
पर शुक्रिया मानना चाहिए।
हम पदमापदम भाग्यशाली हैं।
पदमापदम शुक्रिया मेरे मीठे बाबा

“सच्ची खोज अच्छी खबर”

ज्ञान सरोवर

दिव्य ज्ञान

जब तक सर्वोच्च सत्य अज्ञात है, तब तक शास्त्रों का अध्ययन व्यर्थ है, और जब सर्वोच्च सत्य ज्ञात हो जाता है, तब भी शास्त्रों उतना ही व्यर्थ है।

“शास्त्र नहीं, ज्ञात की आवश्यकता है”

नमः शिवाय
आपका मंगल हो।

R.N.I.Reg.No.MAHIN/2009/27377

(हिन्दी साप्ताहिक)

डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ग : 17 अंक : 38

(प्रत्येक गुरुवार)

मुम्बई, 13 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2025

पृष्ठ : 8

मूल्य : 2.00 रुपये

दिल्ली कार ब्लास्ट : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने की समीक्षा बैठक, दिए कड़ी कार्रवाई के निर्देश

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में हुए कार ब्लास्ट के मामले में कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। दोषियों को न्याय के कटघरे में लाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प को दोहराते हुए अमित शाह ने कहा कि इस कृत्य में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को कड़ी सजा का सामना करना पड़ेगा। गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली कार ब्लास्ट के बाद मंगलवार को शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, दिल्ली कार ब्लास्ट पर वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। उन्हें इस घटना के पीछे के प्रत्येक दोषी की तलाश करने के निर्देश दिए। इस कृत्य में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को हमारी एजेंसियों की कड़ी सजा का सामना करना पड़ेगा। बैठक में केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन, खुफिया ब्यूरो के निदेशक तपन कुमार डेका, दिल्ली पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के महानिदेशक (डीजी) सदानंद वसंत दाते शामिल हुए। इससे पहले, प्रधानमंत्री मोदी कड़ा संदेश दे चुके हैं कि षड्यंत्रकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने भूटान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान कहा, मैं कल रात भर इस घटना की जांच में जुटी सभी एजेंसियों के साथ सभी महत्वपूर्ण लोगों के साथ संपर्क में था। विचार विमर्श चलता था। जानकारी के तार जोड़े जा रहे थे। हमारी एजेंसियां इस षड्यंत्र की तह तक जाएंगी। इसके पीछे के षड्यंत्रकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। विस्फोट की जांच के लिए 500 से अधिक सुरक्षा अधिकारियों की एक टीम गठित की गई है, जबकि दिल्ली-एनसीआर में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और प्रमुख प्रतिष्ठानों पर एनएसजी कमांडो तैनात किए गए हैं। दिल्ली पुलिस सूत्रों के अनुसार, जांच एजेंसियां एक हजार से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही हैं। उन्हें संदेह है कि कार विस्फोट ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाने के इरादे से किया गया एक आत्मघाती हमला हो सकता है। जांच एजेंसियां सोशल मीडिया गतिविधियों पर भी नजर रख रही हैं और दिल्ली भर के कई स्थानों से मोबाइल फोन का डंप डेटा इक-अ कर रही हैं।



शिव वरदानी भवन, मुलुन्द पर, वी. के आदरणीया सब जोन इन्चार्ज मुलुन्द के मार्गदर्शक वी. के बेनुगोपान भाई के उपस्थिति में वाचन हुआ



मुम्बई। सेन्टर की इन्चार्ज गोदावरी दीदी के मार्ग दर्शन में माउन्ट आबू से पधारे प्रेरणा स्रोत के मार्गदर्शक वी. के बेनुगोपान भाई के उपस्थिति में बी. के वर्षा बेन ने मुरली का वाचन हुआ। सुनाई गई। उसके पश्चात B.K. गोदावरी दीदी जी के मार्ग दर्शन में सुन्दर व्यवस्थित भोग प्रसाद की व्यवस्था की गई। तथा बी. के. गोदावरी दीदी जी के मार्गदर्शन में सभी बहनों एवं भाइयों ने कतार में खड़े होकर प्रसाद भोग किया गया प्रेरणा के मार्गदर्शन में ही सभी भाई बहनो द्वारा भोग लेते समय वी. के. वेन गोपाल भाई ने एक फोटो गुप 2 तैयार किया। जो बहनों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस सम्बंध में सभी भाई बहनों ने वहीं दीदी मुलुन्द सेन्टर के इन्चार्ज है। कम से कम 12 बहनों पालना भी करती है। ऐसी सब जोन इन्चार्ज मीठी एवं प्रे डी गोदावरी बहा दीदी जी का सभी हृदयवन आभार व्यक्त किया।



युवा ब्रिगेड असोसिएशन द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन



मुम्बई - युवा ब्रिगेड स्टेशन के सामने, भांडुप पर. पर असोसिएशन द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कादम्बरी क्लिनिक, भांडुप पुलिस

दवायें वितरित किया गया। इस शिविर को सफल बनाने में समाजसेवी राकेश मिश्रा, शैलेश यादव, यास्मीन शेख का विशेष

योगदान प्राप्त हुआ। शिविर में तुलशेट पाड़ा, भांडुप सोनापुर, लेक रोड़ के निवासियों ने अपना चेकअप करा कर औषधि प्राप्त किया।

इस बार आतंक की साजिश इतनी भयावह थी कि अगर गुजरात ATS एक दिन भी देर कर देती, तो भारत ने शायद अपने इतिहास का सबसे बड़ा जनसंहार देखा होता

गुजरात ATS ने आतंकी डॉक्टर मोहिउद्दीन अहमद सैयद को गिरफ्तार कर एक ऐसा मॉड्यूल तोड़ा है जो सीधे ISIS के ISKP ग्रुप से जुड़ा था। यह डॉक्टर कोई आम अपराधी नहीं, बल्कि 'मौत का वैज्ञानिक' था। उसने कैस्टर ऑयल से रेजिन नामक एक ऐसा तरल जूहर तैयार किया जो साइनाइड से 600 गुना ज्यादा खतरनाक है। न कोई गंध, न स्वाद कृतमलब अगर इसे फल, सब्जियों या मांस में इंजेक्ट कर दिया जाता, तो लाखों जिंदगियां एक पल में खत्म हो सकती थीं।

ATS की नज़र में यह डॉक्टर तब आया जब डिप्टी एसपी

एस.एल. चौधरी को खुफिया इनपुट मिला कि देश में कोई खतरनाक केमिकल-आधारित आतंकी नेटवर्क एक्टिव है। महीनों की निगरानी के बाद अहमदाबाद-अडालज टोल प्लाज़ा पर फोर्ड कार में सवार डॉक्टर को घेर लिया गया। तलाशी में दो Glock पिस्टल, एक Beretta पिस्टल, 30 कारतूस और 10 लीटर खतरनाक केमिकल मिला। फोन डेटा रिकवरी में पता चला कि वह अफगानिस्तान स्थित ISIS नेताओं के संपर्क में था।

पूछताछ में उसके दो साथी कृ आजाद सैफी और मोहम्मद सुहेल (उत्तर प्रदेश निवासी)-

भी पकड़े गए। हथियार पाकिस्तान से ड्रोन के ज़रिए राजस्थान बॉर्डर पर गिराए गए थे। ये लोग दिल्ली, लखनऊ और अहमदाबाद की रेकी कर चुके थे और हमला बहुत जल्द करने वाले थे।

अगर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सजग निगरानी और गुजरात ATS की तेज़ कार्रवाई न होती, तो न जाने कितने परिवार आज मातम मना रहे होते। यह घटना साफ़ बताती है कि भारत आज भी आतंकियों के निशाने पर है, और मोदी जी की चौकसी ही देश की सबसे बड़ी सुरक्षा ढाल है।

डिस्मा के दिपावली स्नेह मिलन समारोह मे बाजार समिती चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापती विशेष अतिथी

दारुखाना आईरन स्टील एंड स्क्रॅप मर्चेन्ट ऐशोसियेशन (डिसमा) द्वारा मुंबई स्थित एम. सी.ए. सभागार मे दिपावली स्नेहमिलन समारोह आयोजित कीया गया। डिस्मा द्वारा विशेष आमंत्रण पर कलंबोली बाजार समिती के चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापती, सदस्य नरसीराम चौधरी, अशोक भंडारी मासमा के मॅनेजिंग कमेटी के कनकराज

घोडा मासमा मिडिया कन्वेयर मंगलचंद सेठ दिपावली स्नेहमिलन समारोह मे उपस्थित रहे और डिस्मा के अध्यक्ष भरत कनकीया और सचिव सतीश ने विशेष रुप से स्वागत कीया। समारोह मे उपस्थित रहने के लिए आभार प्रकट कीया।

कलंबोली बाजार समिती चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति ने डिस्मा के सभी व्यापारी बंधुओ

को दिपावली की शुभकामनाएं दी और आमंत्रण के लिए आभार प्रकट कीया। कार्यक्रम के पश्चात स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली ने फोन करके डिस्मा अध्यक्ष सह सभी व्यापारी बंधुओ को दिपावली की हार्दिक शुभकामना और कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी। यह जानकारी मासमा कन्वेयर मंगलचंद सेठ ने दी।

दृष्टिकोण

राजनीतिक अस्तित्व की तलाश में जुटी कांग्रेस

बिहार चुनाव का ऊँट किस करवट बैठेगा, विजय का वरण कौन करेगा, यह तो भविष्य के गर्भ में ही छिपा है, किन्तु अपने राजनीतिक अस्तित्व की तलाश में जुटी कांग्रेस का रुदाली विलाप चुनाव परिणामों से पूर्व ही प्रारम्भ हो गया है। कहना अनुचित न होगा, कि चुनावों में वोट चोरी का विमर्श गढ़ने वाले तत्व जहाँ तहाँ वोट चोरी के प्रमाण तलाश कर चुनाव व्यवस्था को चुनौती देने में जुटे हैं। कभी मतदाता सूचियों पर सवाल उठाते हैं। कभी किसी भी घटना का तिल का ताड़ बनाने के लिए एड़ी से चोटी तक का जोर लगाने लगते हैं।

हर चुनाव को वोट चोरी से जोड़कर चुनाव आयोग पर सवाल उठाने वाली कांग्रेस आज स्वयं सवाल के घेरे में है। 2014 से केंद्र की सत्ता से दूर कांग्रेस 2025 लोकसभा चुनावों में पहले से अधिक सीटें जीतकर आई, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी का भी प्रदर्शन अच्छा रहा, यदि

उन चुनावों में वोट चोरी हुई, तो वोट चोरी से किसका लाभ हुआ, किसे पहले से अधिक सीटें मिली ? चुनाव व्यवस्था में जुड़े लोग जानते हैं, कि कितने गहन प्रशिक्षण के उपरांत ईवीएम के प्रयोग में कितनी सावधानी बरती जाती है। लाखों कर्मचारी चुनाव की पारदर्शिता के लिए अपनी रातों की नींद और दिन का चैन गंवाते हैं, तब कहीं जाकर निष्पक्ष चुनाव संपन्न कराते हैं।

अपनी राजनीतिक जमीन खो चुके राजनीतिक दल जन विश्वास खो देने के कारण चुनाव हारते हैं, किन्तु अपनी हार का ठीकरा अपनी कमजोरियों पर नहीं बल्कि चुनाव आयोग और सत्ता पक्ष पर फोड़ने से बाज नहीं आते। समझ नहीं आता कि कांग्रेसी युवराज आखिर ऐसा क्यों समझते हैं, कि आम मतदाता उनकी विचारधारा और वंशवाद का गुलाम है तथा वह केवल कांग्रेस के पक्ष में ही मतदान करने के लिए बाध्य है। क्या जिन वोटों के चोरी होने का आरोप कांग्रेस

चुनाव आयोग और सत्ता पक्ष पर लगाती है, क्या वे सभी वोट कांग्रेस के प्रामाणिक वोट हैं ? कांग्रेस के वंशवादी परिवार की नीयत इस प्रकार के आरोपों से साफ समझी जा सकती है, क्योंकि कांग्रेस जानती है, कि वह जनसमर्थन खो चुकी है तथा उसकी हैसियत अपने बल पर सत्ता में टिकने की नहीं रह गई है। इसलिए ही झूठे विमर्श गढ़ कर वह अपनी खीज मिटाने का पूर्वनियोजित प्रयास कर रही है।



(डॉ. सुधाकर आशावादी)
विनायक फीचर्स

शुभ शनिवार

खुद को कभी अकेला न समझें
जिसने ये संसार बनाया है वो
हर कदम तुम्हारे साथ है..

जय श्री गुरु

P.P. Pandey - 9833567799

सुविचार

वक्त बता सकता है
आपके पास कितनी दौलत है
लेकिन दौलत नहीं बता सकती कि
आपके पास कितना वक्त है,
इसलिए मन से अमीर रहिए,
धन का क्या, आता जाता रहता है !

वीरेन्द्र मलिक सम्पादक जन प्रसून समाचार पत्र नोएडा
अध्यक्ष सीनियर सिटीजन वेलफेयर एसोसिएशन सेक्टर 15, महासचि...

Shiv Baba's Murli Points
12/11/2025

1. तुम ड्रामा के खेल को जानते हो इसलिए शुक्रिया मानने की भी बात नहीं है।
2. विकर्मों से बचने के लिए इस शरीर में रहते अशरीरी बनने का पुरुषार्थ करना है। याद की यात्रा ऐसी हो जो शरीर की विस्मृति होती जाए।
3. ज्ञान का मंथन कर आस्तिक बनना है। मुरली कभी भी मिस नहीं करनी है। अपनी उन्नति के लिए डायरी में याद का चार्ट नोट करना है।
4. इस ब्राह्मण जीवन की विशेषता है ही रूहानियत। रूहानियत की शक्ति से ही स्वयं को वा सर्व को परिवर्तन कर सकते हो। इस शक्ति से अनेक प्रकार के जिस्मानी बन्धनों से मुक्ति मिलती है।
5. सत्यता की विशेषता द्वारा खुशी और शक्ति की अनुभूति करते चलो।

हृदय रोगियों के लिए बड़ी राहत, आ गई

60 प्रतिशत तक कोलेस्ट्रॉल घटाने वाली कारगर दवा

हृदय रोग वैश्विक स्तर पर मौत का सबसे बड़ा कारण रहे हैं। हर साल इसके कारण लाखों लोगों की जान चली जाती है। साल 2022 के आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि इस साल दुनियाभर में लगभग 19.2 मिलियन (1.9 करोड़) लोगों की हृदय रोगों (सीवीडी) से मौत हो गई। ये संख्याएं पिछले वर्षों की तुलना में तेजी से बढ़ी हैं, साल 1990 में हृदय रोगों से मरने वालों की संख्या 1.31 करोड़ थी। स्वास्थ्य विशेषज्ञ हृदय की बीमारियों के लिए हाई ब्लड प्रेशर और हाई कोलेस्ट्रॉल को सबसे बड़ा जोखिम कारक बताते हैं। हृदय रोग विशेषज्ञ कहते हैं, असंतुलित खानपान, जंक फूड्स, शारीरिक व्यायाम और नींद की कमी से कोलेस्ट्रॉल बढ़ने का खतरा रहता है। बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल धीरे-धीरे धमनियों में जमा होकर उन्हें संकरा करता है, जिससे हृदय तक खून का संचार बाधित होने लगता है। यही स्थिति आगे चलकर हार्ट अटैक, स्ट्रोक और अन्य गंभीर हृदय रोगों का कारण बन जाती है। कोलेस्ट्रॉल की इस समस्या को कम करने के लिए विशेषज्ञों की टीम ने एक ऐसी कारगर दवा की जानकारी दी है जो बैड कोलेस्ट्रॉल को 55-60 तक कम करने में मददगार हो सकती है। कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली दवा एनलिसिटाइड

मर्क कंपनी द्वारा विकसित इस



प्रायोगिक दवा का नाम एनलिसिटाइड है। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के वैज्ञानिक सत्र 2025 में इससे होने वाले फायदों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है, जिसके आधार पर विशेषज्ञों की कहना है कि ये हार्ट के मरीजों के लिए ये काफी कारगर दवा हो सकती है। मौजूदा समय में इस्तेमाल किए जाने वाले पी सी एस के 9 अवरोधकों (इंजेक्शन) के विपरीत, एनलिसिटाइड पहली ओरल पीसीएसके9 अवरोधक है, जिसे दिन में बस एक बार लेनी होती है। इस दवा के अंतिम चरण के ट्रायल्स में पाया गया है कि पहले से ही स्टैटिन ले रहे रोगियों में ये बैड कोलेस्ट्रॉल को औसतन 55-60 तक कम कर सकती है। स्टैटिन को कोलेस्ट्रॉल कम करने की सबसे अच्छी दवा मानी जाती रही है।

60 प्रतिशत तक कम हो सकता है खतरा

मेडिकल रिपोर्ट्स और प्रेस विज्ञप्ति से पता चलता है कि एनलिसिटाइड, पीसीएसके9 नामक लिबर प्रोटीन को अवरुद्ध करती है, जो शरीर की कोलेस्ट्रॉल साफ करने की क्षमता को धीमा कर देती है। एक बार पीसीएसके9 अवरुद्ध हो जाने पर बैड कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होने लगता है। फेज-3 के ट्रायल्स से पता चलता है कि जिन लोगों ने स्टैटिन जैसी कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली दवाओं के साथ एनिसिटाइड दवा ली, उनमें

24 हफ्तों में कोलेस्ट्रॉल का स्तर 60 प्रतिशत तक कम पाया गया। नतीजतन ऐसे लोगों में हृदय रोगों का खतरा भी कम हो गया।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, इसके आगे के परिणामों पर नजर रखी जा रही है। अगर वृहद स्तर पर इसके परिणाम बेहतर रहते हैं तो ये हृदय रोगियों के लिए काफी कारगर दवा साबित हो सकती है। इसके अलावा सभी लोगों को ब्लड कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कंट्रोल में रखने के लिए लाइफस्टाइल और खान-पान को ठीक रखने वाले उपाय करते रहना चाहिए। कोलेस्ट्रॉल धीरे-धीरे बढ़ता है लेकिन नुकसान एक झटके में करता है। इसलिए इसे समय रहते नियंत्रित करना दिल को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक तरीका है।

कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल रखने के उपाय जरूरी

दिल को स्वस्थ रखने और कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल रखने के लिए जरूरी है कि आप खानपान में बदलाव करें, नियमित व्यायाम, तनाव को कंट्रोल करने वाले उपायों के साथ और समय-समय पर हेल्थ चेकअप कराते रहना जरूरी है। रोजाना कम से कम 30 मिनट की वॉक, हरी सब्जियां, फल, ओट्स और नट्स जैसे फाइबरयुक्त खाद्य पदार्थ कोलेस्ट्रॉल को प्राकृतिक रूप से कम करने में मदद करते हैं। वहीं, तली-भुनी चीजें, रेड मीट और अधिक चीनी वाले खाद्य पदार्थों से दूरी बनाए रखना जरूरी है।

आठ घंटे नींद लेने के बाद भी बना रहता है आलस, कहीं ये थायरॉइड के संकेत तो नहीं, जानें लक्षण

अगर आप रोजाना पर्याप्त 8 घंटे की नींद ले रहे हैं, लेकिन फिर भी सुबह उठने पर अत्यधिक आलस और थकान महसूस करते हैं, तो इसे सिर्फ काम का दबाव या कमजोरी समझने की गलती न करें। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, यह लक्षण थायरॉइड ग्रंथि के सही ढंग से काम न करने का एक बड़ा संकेत हो सकता है, विशेष रूप से हाइपोथायरॉइडिज्म की स्थिति में। थायरॉइड ग्रंथि गले में स्थित होती है और यह शरीर के मेटाबॉलिज्म को नियंत्रित करने वाले हार्मोन (T3 और T4) बनाती है। जब यह ग्रंथि पर्याप्त हार्मोन नहीं बनाती, तो शरीर की सभी प्रक्रियाएं धीमी हो जाती हैं, जिससे कोशिकाओं को काम करने के लिए ऊर्जा नहीं मिलती। इसका सीधा असर एनर्जी लेवल पर पड़ता है। यह क्रोनिक थकान आपको थका हुआ, सुस्त और काम में मन न लगने वाला महसूस कराती है। इस स्थिति को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए क्योंकि अनदेखा करना न केवल आपके दैनिक जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि वजन बढ़ने और डिप्रेशन जैसे अन्य गंभीर जोखिमों को भी बढ़ाता है। इसलिए समय पर इसका पहचान करना बहुत जरूरी है, ऐसे में आइए थायरॉइड के प्रमुख लक्षण के बारे में जानते हैं।

लगातार थकान और आलस का कारण

थायरॉइड हार्मोन की कमी

(हाइपोथायरॉइडिज्म) आपके शरीर के मेटाबॉलिज्म को धीमा कर देती है। यह हार्मोन ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण है। जब हार्मोन कम बनते हैं, तो शरीर की कोशिकाएं धीमी गति से काम करती हैं, जिससे शरीर को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पाती। यही कारण है कि पर्याप्त नींद लेने के बाद भी, शरीर में लगातार आलस और अकारण थकान बनी रहती है।

वजन का बढ़ना और ठंडी संवेदनशीलता

थकान के साथ-साथ, थायरॉइड का एक और स्पष्ट संकेत है बिना कारण वजन का बढ़ना। धीमे मेटाबॉलिज्म के कारण शरीर कैलोरी को तेजी से बर्न नहीं कर पाता, जिससे फैट जमा होने लगती है। इसके अलावा थायरॉइड हार्मोन शरीर के तापमान को भी नियंत्रित करते हैं, इनकी कमी होने पर आपको सामान्य से ज्यादा ठंड महसूस होती है, जबकि दूसरों को सामान्य लग रहा होता है।

त्वचा, बाल और मांसपेशियों पर लक्षण

थायरॉइड की कमी से त्वचा भी प्रभावित होती है। आपको त्वचा का रूखापन, खुजली और बेजान दिखना महसूस हो सकता है। बाल तेजी से झड़ने लगते हैं और पतले हो जाते हैं। इसके साथ ही, सुबह उठने पर कई लोगों को जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द और अकड़न की शिकायत भी रहती है।

हर साल लाखों मासूमों की जान ले रही है ये बीमारी, इन लक्षणों पर दें गंभीरता से ध्यान

हाल के वर्षों में कई प्रकार की घातक बीमारियों का खतरा बच्चों में भी तेजी से बढ़ता हुआ देखा गया है। मेडिकल साइंस की प्रगति और प्रभावी उपचारों के चलते पहले की तुलना में अब बाल मृत्यु दर में कमी तो आई है पर कुछ बीमारियां अब भी गंभीर चिंता का कारण बनी हुई हैं। बच्चों में निमोनिया की समस्या उनमें से एक है। मेडिकल रिपोर्ट्स के मुताबिक निमोनिया दुनियाभर में बच्चों की मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक बना हुआ है। रोकथाम और उपचार की उपलब्धता के बावजूद यह हर साल किसी भी अन्य संक्रामक रोग की तुलना में सबसे ज्यादा बच्चों की जान लेता है। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, निमोनिया से हर साल पांच वर्ष से कम उम्र के 7 लाख से ज्यादा बच्चों की मौत हो जाती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ सभी लोगों को इस बीमारी से बच्चों को बचाए रखने के उपाय करते रहने के लिए माता-पिता को सावधान करते हैं। निमोनिया के

खिलाफ लड़ाई में दुनिया को एक वार्षिक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से हर साल 12 नवंबर को वर्ल्ड निमोनिया डे मनाया जाता है।

बच्चों में निमोनिया का खतरा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल दुनिया भर में 50 लाख से अधिक बच्चे पांच वर्ष की आयु से पहले ही बीमारियों के कारण अपनी जान गंवा देते हैं, जिनमें सबसे बड़ा कारण निमोनिया है। भारत भी इस चिंता से अछूता नहीं है। डॉक्टर कहते हैं, बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता पूरी तरह विकसित नहीं होती, जिससे वे संक्रमणों का शिकार जल्दी बन जाते हैं। बदलती जलवायु, बढ़ता वायु प्रदूषण, असंतुलित आहार और अस्वच्छ वातावरण इस समस्या को और गहरा रहे हैं। बड़े शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर बच्चों के फेफड़ों के लिए बेहद हानिकारक साबित हो रहा है।

बच्चों में निमोनिया और इसका

जोखिम

निमोनिया फेफड़ों का एक गंभीर संक्रमण है, जो वायरस, बैक्टीरिया या फंगस तीनों के कारण हो सकता है। इससे बच्चे को तेज बुखार, खांसी, सांस लेने में दिक्कत, और सीने में दर्द जैसी समस्याएं होती हैं। अगर समय पर इलाज न मिले, तो यह ऑक्सीजन की कमी और फेफड़ों के फेल होने का कारण बन सकता है। डॉक्टरों का कहना है कि ठंड के मौसम में निमोनिया के मामले सबसे ज्यादा बढ़ते हैं। छोटे बच्चे, कुपोषित बच्चे या जिनकी इम्युनिटी कमजोर है, उनमें यह खतरा कई गुना बढ़ जाता है। भारत में अभी भी कई परिवार ऐसे हैं जहां बच्चे का टीकाकरण अधूरा रहता है, जिससे संक्रमण का खतरा और बढ़ जाता है।

निमोनिया के लक्षणों के बारे में जानिए

निमोनिया के लक्षण, संक्रमण के आधार पर अलग-अलग हो



सकते हैं। 5 साल से कम उम्र के बच्चों में तेज सांस लेने या घरघराहट की दिक्कत हो सकती है। चूंकि यह फेफड़ों को प्रभावित करने वाली स्थिति है ऐसे में इसमें सांस की दिक्कत होना सबसे आम लक्षण है।

बलगम के साथ खांसी और बुखार की दिक्कत।

सांस की तकलीफ जो सामान्य गतिविधियों को करते समय अधिक होती है।

सीने में दर्द जो सांस लेने या खांसने पर और बढ़ जाता है।

थकान और भूख कम लगना। मतली या उल्टी।

निमोनिया का इलाज और बचाव के तरीके

निमोनिया के लक्षणों की

स्थिति में ब्लड टेस्ट, छाती के एक्स-रे की मदद से इसकी पुष्टि की जाती है। निमोनिया के कारणों के आधार पर इसका इलाज होता है। अगर यह बैक्टीरियल संक्रमण के कारण है तो इसमें एंटीबायोटिक दवाओं का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अलावा निमोनिया के लक्षणों को कम करने के लिए कुछ घरेलू उपचार विधियों जैसे गरारे, गुनगुना पानी पीने से भी लाभ मिल सकता है। निमोनिया से बचाव के लिए टीके उपलब्ध हैं। इसके अलावा जीवनशैली को ठीक रखकर भी आप इसके जोखिम को कम कर सकते हैं। बच्चे को साफ-सुथरा और प्रदूषण से मुक्त वातावरण में रखना चाहिए। इसके अलावा बच्चों को स्तनपान कराती रहें जिससे उनके शरीर को पौष्टिक तत्व प्राप्त हों। ठंड के दिनों में बच्चों को सुरक्षित रखना और भी जरूरी हो जाता है।

सम्पादकीय...



दिल्ली के ऐतिहासिक नेहरू स्टेडियम का होगा कायापलट, अब बनेगी अत्याधुनिक 'स्पोर्ट्स सिटी'

दिल्ली का ऐतिहासिक नेहरू स्टेडियम एक बार फिर चर्चा में है। मौजूद जानकारी के अनुसार, खेल मंत्रालय अब इस पुराने ढांचे को तोड़कर एक आधुनिक "स्पोर्ट्स सिटी" के रूप में विकसित करने की योजना बना रहा है। बता दें कि यह प्रस्ताव अभी शुरुआती चरण में है और काम की समयसीमा तय नहीं की गई है। इस पूरे प्रोजेक्ट के तहत लगभग 102 एकड़ क्षेत्र में एक ऐसा खेल परिसर बनाया जाएगा जहां एक ही जगह पर कई खेलों की सुविधाएं, खिलाड़ियों के लिए उच्च-प्रदर्शन केंद्र और मीडिया स्टूडियो मौजूद रहेंगे। गौरतलब है कि नेहरू स्टेडियम का निर्माण बीसवीं सदी के अंत में हुआ था और इसे 2010 के कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए बड़े पैमाने पर आधुनिक रूप दिया गया था। उस समय इसे राजधानी का प्रमुख खेल स्थल माना जाता था, लेकिन अब मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, इस विशाल परिसर का केवल लगभग 28 प्रतिशत हिस्सा ही नियमित रूप से इस्तेमाल किया जा रहा है। यही कारण है कि सरकार अब इसे नए रूप में विकसित करना चाहती है ताकि यह पूरे साल खिलाड़ियों और दर्शकों दोनों के लिए उपयोगी साबित हो सके। खेल मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, इस परियोजना का उद्देश्य केवल एक स्टेडियम को पुनर्निर्मित करना नहीं, बल्कि एक ऐसी "स्पोर्ट्स सिटी" तैयार करना है जो प्रदर्शन, प्रशिक्षण, प्रसारण और जनभागीदारी सभी को एक ही स्थान पर जोड़ दे। मंत्रालय की योजना है कि इसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं जैसे कि एथलीट हॉस्टल, खेल विज्ञान केंद्र, फिजियोथेरेपी लैब, और इंडोर-अरेना शामिल किए जाएं। इसके अलावा, एक अत्याधुनिक प्रसारण स्टूडियो भी बनाया जाएगा ताकि खेल संघ अपनी सामग्री खुद तैयार कर सकें और स्पॉन्सरशिप से आय बढ़ा सकें। बता दें कि भारत सरकार इस प्रोजेक्ट के लिए कतर और ऑस्ट्रेलिया के मॉडल का अध्ययन कर रही है। इन देशों ने अपने खेल परिसरों को न सिर्फ खिलाड़ियों के प्रशिक्षण केंद्र के रूप में बल्कि आम जनता के लिए भी सक्रिय स्थानों के रूप में विकसित किया है। उदाहरण के तौर पर, ऑस्ट्रेलिया में "स्पोर्ट्स प्रीसिक्ट्स" ऐसे बनाए गए हैं जहां मेट्रो और बस नेटवर्क सीधा स्टेडियम तक जुड़ा होता है, जिससे ट्रैफिक जाम की समस्या नहीं होती। वहीं, कतर ने अपने स्टेडियमों को इस तरह से डिजाइन किया कि बड़े आयोजनों के बाद भी वे स्थानीय समुदाय के काम आ सकें। मौजूद सूत्रों के मुताबिक, भारत में इस योजना को लागू करने में कई चुनौतियां भी सामने आ सकती हैं, जैसे भूमि उपयोग की अनुमति, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की साझेदारी, और लंबी अवधि में रखरखाव की योजना। साथ ही, स्टेडियम को तोड़ने से पहले वहां मौजूद खेल संघों और आयोजनों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था भी करनी होगी। फिलहाल, मंत्रालय ने यह स्पष्ट किया है कि परियोजना पर काम शुरू होने की कोई निश्चित तिथि नहीं तय की गई है, लेकिन अध्ययन और योजना प्रक्रिया तेजी से चल रही है। खेल मंत्री की हाल की कतर यात्रा को इस दिशा में एक गंभीर कदम माना जा रहा है। आने वाले महीनों में यह तय होगा कि क्या नेहरू स्टेडियम का यह नया रूप वास्तव में भारत की खेल संरचना को नई दिशा दे पाएगा या फिर यह भी किसी अधूरी योजना की तरह कागज़ों तक सीमित रह जाएगा।

यह ब्लास्ट ब्लास्ट नहीं खुफिया तंत्र की घोर नाकामी है

हमारा देश चारो तरफ से चौकस सुरक्षित रहे, इसके लिए देश में करोड़ों वैतनिक लोग लगे हैं। जो खरबों रुपए सेवा के नाम पर डकार रहे हैं। जिसमें सीमा सुरक्षा बल, थल सेना, जल सेना, वायु सेना, पुलिस, सीआईडी, सीबीआई, आईबी, एटीएस, एन आई ए, सीआरपीएफ, आरपीएफ, होमगार्ड आदि विभाग हैं। सबके सब देश प्रांत जिला गाँव की सुरक्षा करने के लिए सरकार से मोटी पगार लेते हैं। उपरोक्त उल्लिखित विभागों को पगार देने के लिए सरकार जनता से मोटा टैक्स लेती है। इसके बावजूद न देश सुरक्षित है न देशवासी। जब से होश सम्हाला है। कोई ऐसा दिन नहीं बीता, जिस दिन किसी खुशखबरी को सुनकर दिल आह्लादित हो गया हो। आये दिन चोरी डकैती छिनैती फिरौती आतंकी घटनायें जातिवादी दंगा धर्मवादी दंगा से लाखों निर्दोष लोगों की बलि चढ़ रही हैं। सभी सुरक्षा के इंतजाम नगण्य से दिख रहे हैं। यदि चौकस होते तो लाखों जिंदगियां यूँ बेमौत न मरती। न ही लोगों को अपना जीवन संकटग्रस्त लगता।

विगत कुछ वर्षों से देश में लोग थोड़ा सा सुकून महसूस कर रहे थे। लोगों को लगने लगा था शायद मेरा दिया हुआ कर मेरे काम में लग रहा है। क्योंकि लोग २०१७ के बाद से काफी राहत की सांस लेना शुरू कर दिए थे। क्योंकि विगत कुछ दिनों से देश में न कोई आतंकी घटना हो रही थी न जातिवादी या धर्मवादी दंगा ही हो रहा है। चोरी डकैती छिनैती आदि में भी कमी दिख रही थी। मगर इसी बीच विगत वर्ष पुलवामा की घटना ने लोगों में सिहरन पैदा कर दी। हालांकि भारत सरकार ने पुनः सिहरन को दिल से निकालने के लिए आपरेशन सिंदूर चलाकर आतंकवादियों की कमर तो थोड़ी तोड़ा। मगर कल लालकिले के पास में हुआ धमाका फिर से सभी सुरक्षा एजेंसियों पर सवालिया निशान लगा दिया।

समझ में नहीं आता जो बातें घटना के बाद बताई जाती हैं, वहीं बातें पहले क्यों नहीं पता की जाती। घटना के बाद सबकुछ छानकर बाहर कर लेते हो तो, घटना के पहले सोये क्यों रहते हो। क्या घटना जानबूझकर करवाई जाती है। जिस तरह से घटना के बाद सारी सुरक्षा एजेंसियां ऐक्टिव होती हैं। वो

घटना के पहले कहीं सोती रहती हैं। जब भी कोई आतंकी घटना होती है तो सरकार पाकिस्तान पर अपना ठीकरा फोड़ कर इति श्री मान लेती है। दो चार को पकड़ कर टीवी पर आके भाषड़बाजी करके काम सम्पन्न करके खुशी मनाती है। अपनी नाकामियों को बहादुरी का तमगा



देकर भोली भाली जनता से ताली बजवाती है। मगर अपनी नाकामियों पर कभी भी काम नहीं करती। ऐसा नहीं है कि सरकार और सुरक्षा एजेंसियां जानती नहीं। सब जानती हैं। फिर भी कुछ करती नहीं। साँप निकल जाने के बाद लकीर पीटती हैं। यदि कोई नई बात हो जाय तो धोखे से हुआ समझा जा सकता है। आतंक का दंश हम भारतवासी १९४७ से ही झेलते आ रहे हैं। इसको रोकने के लिए सरकारें समय समय पर बहुत से नियम कानून बनाये। पर फायदा कुछ नहीं हुआ। आतंकवाद कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा है। एक कहावत है ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया। तरीके वहीं हैं। आतंकी पाकिस्तान से आकर हमारे देश में लोगों की जिंदगियों से खेलकर आसानी से चले जाते हैं। और हम यहाँ टीवी पर बैठकर डिबेट करके इति श्री कर लेते हैं। करते कुछ नहीं हैं। हमारी तमाम खुफिया एजेंसी क्या कर रही हैं। सवाल ये है कि इतनी सुरक्षा व्यवस्था होने के बाद आतंकी अंदर आते कैसे हैं। कल की घटना हमारे सभी सुरक्षा एजेंसियों की नाकामी का परिणाम है। आखिर हम भारतवासी कब तक नेताओं की राजनीति का शिकार बनते रहेंगे। कब तक हम भारतवासी अपनों की लाश पर रोयेंगे। आखिर कब तक हम भारतवासी अपनी खुफिया एजेंसियों की नाकामियों का दंश झेलेंगे। कब खुफिया एजेंसियां अपना काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करेंगी। कल की घटना हर भारतवासियों को सोचने पर विवश कर रही है। माना की विगत सरकारें कुछ नहीं कर पा रही थीं। मगर आप तो उनकी ही नाकामियों से निजात दिलाने के लिए आये हो। आपको विगत १२

वर्षों से हम भारतवासी चुन रहे हैं तो उनकी नाकामियों को सुधारने के लिए ही न। यदि आप भी उनके जैसे ही काम करेंगे तो उनमें और आपमें अंतर ही क्या है। आपको हम भारतवासी इसीलिए चुन रहे हैं कि आप हम सबकी सुरक्षा के साथ साथ देश का गौरव बढ़ायें। हालांकि आपने

देश का गौरव बढ़ाया है। लेकिन वह गौरव किस काम का, जिसको देखने के लिए हम जीवित ही नहीं रह पायेंगे।

सरकार को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि कल की घटना घोर खुफिया तंत्र की लापरवाही का परिणाम है। यदि सही ढंग से कार्य किया होता तो कल वो तमाम जिंदगियां यूँ बरवाद नहीं होती। सरकार को चाहिए कि ऐसे हर उस विभाग के विभागाध्यक्षों पदाधिकारियों को तत्काल बर्खास्त करके नये जोशीले कर्तव्यनिष्ठ लोगों को जो देश और देशवासियों के प्रति समर्पित हों। उन्हें उस काम में लगाये। जिंदगियों का मोल मुवावजे से न तोले। जनता की सुरक्षा के लिए इमानदारी व निष्ठा से काम करें। टीवी पर बैठकर घड़ियाली आंसू न बहाये। खुफिया तंत्र की नाकामियों की सजा भोली भाली जनता को न दें। समय रहते जो भी कदम उठाना है उठाये। यदि इसका दोषी पड़ोसी पाकिस्तान है या बंगलादेश तो दोनों को अच्छी तरह से सबक सिखाये। बदजात को आधा अधूरा समझ में नहीं आता। उसे पूरा का पूरा विधिवत समझाना हर समय, समय की मांग होती है। आज समय की मांग है कि किसी भी अपराधी को किसी भी कीमत पर जिंदा न छोड़ा जाय। आतंक भारत में कैंसर की तरह काम कर रहा है। भारत को चाहिए की आतंक का खात्मा करने के लिए आपरेशन करे। और कीमो अथवा रेडिएशन करे। कुछ भी करे पर आतंक को खत्म करे। जनता की उम्मीदों को मरने न दे। और खुफिया तंत्र की नाकामियों कर पर्दा न डाले।



पं. जमदग्निपुरी

मुक्तक मुक्तक — तेरी हसरतें

क्या कसूर था मेरा देकर दिलासा इश्क दूर बैठा है मुझसे।
दरिया ये इश्क में डुबाया तुझे फिर भी रूठ बैठा है मुझसे।
मुझसे ज्यादा प्यार तुझे कोई कर सकता है क्या बताओ।
पूरा किया तेरी हर हसरतों को खुद को लुटा बैठा है खुदसे।
—श्याम कुंवर भारती



रावण को सीता का हरण करना था

उसने वेष बनाया ब्राह्मण का।
 हनुमानजी को राम का भेद लेना था
 उन्होंने वेष बनाया ब्राह्मण का।
 कालनेमी ने हनुमानजी को उनके मार्ग से भटकाने की कोशिश की
 उसने वेष बनाया ब्राह्मण का।
 कर्ण को परशुराम जी से धनुर्वेद का ज्ञान लेना था
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 श्रीकृष्ण को कर्ण को छलना था,
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 श्रीकृष्ण सहित भीमादि पांडवों को छल से जरासंध का वध करना था
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 वरुण को राजा हरिश्चंद्र की परीक्षा लेनी थी
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 विश्वामित्र को राजा हरिश्चंद्र को छलना को था
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 विष्णु को राजा बलि को छलना था
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 अश्विनी कुमारों को च्यवन ऋषि की पत्नी सत्यवती की परीक्षा लेनी थी,
 वेश बनाया ब्राह्मण का।
 अपने अज्ञातवास के दौरान पांडव सहित कुंती तथा द्रौपदी ने कई बार ब्राह्मण का वेश धारण किया।

जब जब किसी को कोई समाजवर्धी, राष्ट्रविरोधी पाप और क्रूर कर्म करना हुआ तो उसने ब्राह्मण का वेश ही धारण किया।
 क्यों? क्योंकि ब्राह्मण नाम है एक भरोसे का। ब्राह्मण नाम है एक विश्वास का।
 ब्राह्मण नाम है सत्य का।
 ब्राह्मण नाम है धर्म का।
 ब्राह्मण नाम है सबका कल्याण चाहने वाले का,
 ब्राह्मण नाम है सबको सुखी देखने वाले का,
 ब्राह्मण नाम है सबको साथ लेकर सन्मार्ग पर चलाने वाले का
 ब्राह्मण नाम है, राष्ट्रभक्ति, दूरदर्शिता, अध्ययन, लगन, ज्ञान, त्याग, तप, बलिदान, शील, धैर्य, निष्पक्षता, संतोष और संयम का।
 इसलिए ब्राह्मण का नाम, ब्राह्मण की प्रतिष्ठा का लाभ उठाना बहुत आसान था। उसके वेश से, उसके नाम से लोगों को मूर्ख बनाना आसान था। उसके नाम से लोगों को ठगना आसान था। आज भी यही हो रहा है....धन्यवाद!!



दिल्ली ब्लास्ट के मृतकों को दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। दिल्ली के लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास हुए भीषण बम ब्लास्ट में मृत लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) लखनऊ महानगर इकाई ने लखनऊ विश्वविद्यालय गेट संख्या एक पर कैंडल मार्च निकाला। परिषद के प्रदेश मंत्री पुष्पेंद्र बाजपेई ने कहा कि यह हमला पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद है। राष्ट्रीय कला मंच सह संयोजक आशुतोष श्रीवास्तव, महानगर सह मंत्री अंशिका सिंह, अवध प्रांत संगठन मंत्री अंशुल विद्यार्थी ने भी अपनी बात रखी।

दिव्य-ज्ञान

जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे। अगर तुम बोओगे, नीम तो, अंगूर की उम्मीद नहीं कर सकते। इसी तरह, तुम अपने मन में जो भी बोओगे, तुम्हारे विचार बीज बन जाएंगे और अंततः वही फसल काटेंगे जो तुमने सोचा था। यहाँ तक कि, तुम जो भी आवाज उत्पन्न करते हो, वह प्रतिध्वनि के साथ वापस लौटता है।

"बेहतर सोचो, सर्वश्रेष्ठ बनने का कारण बनती हैं।"

नमः शिवाय
 आपका मंगल हो।

राम राम जी

शौर्य शिरोमणि परम पराकर्म मर्यादा पुरषोत्तम भगवान प्रभु श्री राम और सर्वगुण संपन्न मेरे प्रभु श्री राम भक्त श्री हनुमान जी की कृपा आप और आपके पूरे परिवार पर सदैव बनी रहे वो हम सभी का कल्याण करे और मेरी उनसे प्रार्थना है कि वे आपके यश और कीर्ति में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी करते रहें।
 सुविचार....सदा निश्चित और हल्के रहना है तो सदा सच्चे रहो और सच का साथ दो, क्योंकि एक झूठ को छिपाने के लिये कई झूठ बोलने पड़ते हैं, जिससे आत्मा और शरीर में भारीपन अनुभव होता है।

दिव्य ज्ञान

मनुष्य और पशु में क्या अंतर है? पशु और मनुष्य दोनों ही इस अद्भुत संसार का आनंद लेते हैं लेकिन, जहाँ पशु केवल इसका



आनंद लेता है, वहीं मनुष्य इस पर विवेक करता है कि इसका आनंद लेना उचित है या अनुचित। जो इसका कभी हनन नहीं करता, वह निषिद्ध पशु के समान है।

जो इसका चिंतन करता है, यदि वह बुद्धिमान है, तो निश्चित रूप से सही मार्ग चुनता है और धार्मिक जीवन जीता है। वह उन अनेकों में से एक है, जिन्हें दिव्यता प्राप्त होती है। ऐसा जीवन धन्य हो।

नमः शिवाय— आपका मंगल हो।



ऊर्जा समाधान योजना.....

केवल बिजली ही नहीं, भरोसे की भी लौ जलाती मध्यप्रदेश सरकार

(पवन वर्मा— विभूति फीचर्स) मध्य प्रदेश सरकार ने हाल ही में ऊर्जा विभाग की समाधान योजना की घोषणा कर लाखों घरेलू उपभोक्ताओं को राहत देने



का बड़ा कदम उठाया है। इस समय प्रदेश में 91 लाख से अधिक लोगों पर आठ हजार करोड़ रुपए से अधिक के बिजली के बिल बकाया हैं। इस तरह राज्य में लगभग 90 लाख से अधिक उपभोक्ता इस योजना से लाभान्वित हो सकते हैं और इसके अंतर्गत करीब 3 हजार करोड़ रुपये तक का सरचार्ज माफ किया जा सकता है।

राज्य के ग्रामीण और शहरी उपभोक्ताओं के लिए बिजली बिल वर्षों से एक गंभीर समस्या रही है। आर्थिक असमानता, महामारी के बाद की चुनौतियाँ और कृषि आधारित आय पर निर्भरता ने लाखों परिवारों को बिजली बिलों के भुगतान में कठिनाई दी है। समाधान योजना इस वर्ग को राहत देने के उद्देश्य से लाई गई है ताकि सामान्य उपभोक्ता अपनी बकाया राशि का निपटारा कर सकें और राज्य की बिजली वितरण प्रणाली में विश्वास पुनर्स्थापित हो। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस योजना को

केवल एक आर्थिक राहत योजना नहीं, बल्कि एक सामाजिक पुनर्संतुलन का प्रयास बताया है। उनका कहना है कि सरकार का उद्देश्य है कि कोई भी नागरिक

स्वेच्छा से जुड़ रहे हैं। इस योजना के लागू होते ही ऊर्जा विभाग ने जिलों में विशेष शिविर आयोजित करने के निर्देश दिए हैं, ताकि ग्रामीण और शहरी उपभोक्ता सीधे वहाँ जाकर अपने बिलों का निपटारा कर सकें। यह केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सरकार की नयी कार्यसंस्कृति का परिचायक है, जिसमें जनता को दफ्तरों के चक्कर लगाने से मुक्ति दिलाने पर ध्यान दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कई अवसरों पर कहा है कि सरकारी योजनाएँ तब तक सार्थक नहीं होतीं जब तक वे आम नागरिक तक सरलता से न पहुँचें।

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार की योजनाओं में "व्यवहारिक जनकल्याण" का स्पष्ट दिखाई देता है। चाहे वह छात्रवृत्ति, आवास या अब बिजली बिल माफी से जुड़ी योजना हो, हर पहल में उनका उद्देश्य "विश्वास की पुनर्स्थापना" दिखता है। समाधान योजना इसी दर्शन की निरंतरता है।

यह योजना आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार ने लगभग 3 हजार करोड़ रुपये तक के सरचार्ज माफ करने का अनुमान लगाया है, जो न केवल उपभोक्ताओं को राहत देगा बल्कि बिजली वितरण कंपनियों के खातों में वास्तविक बकाया राशि के रूप में नकद प्रवाह बढ़ाएगा। यह वित्तीय दृष्टि से एक व्यावहारिक और संतुलित निर्णय है, क्योंकि कई वर्षों से बकाया बिल वसूली के नाम पर करोड़ों रुपये कागज़ी दावों में फंसे हुए थे। राजनीतिक रूप से भी यह कदम समयोचित है। लोकसभा चुनाव के बाद प्रदेश में सरकार जनता के बीच काम कर रही है। डॉ. मोहन यादव की छवि एक ऐसे मुख्यमंत्री के रूप में उभर रही है जो सख्त प्रशासन के

साथ संवेदनशील नेतृत्व का भी उदाहरण हैं। वे न तो केवल घोषणाओं तक सीमित हैं, न ही केवल प्रदर्शन तक बल्कि योजनाओं को धरातल पर लागू कराने की प्रक्रिया में वे व्यक्तिगत रूप से रुचि लेते हैं।

समाधान योजना का भी संदेश यही है कि सरकार जनता के साथ खड़ी है। यह उन लाखों उपभोक्ताओं के लिए भी राहत का संकेत है जो अब तक ब्याज और दंड के बोझ तले दबे हुए थे। अब वे न केवल अपने पुराने बकाए से मुक्त हो सकेंगे, बल्कि नियमित भुगतान की दिशा में भी प्रेरित होंगे।

यहां सवाल केवल आर्थिक लाभ का नहीं है, यह सामाजिक न्याय और भरोसे के निर्माण की प्रक्रिया भी है। बिजली जैसी बुनियादी सुविधा का जब गरीब या मध्यमवर्गीय उपभोक्ता किसी कारणवश बिल नहीं चुका पाते, तो उनके ऊपर ब्याज और जुर्माना किसी दंड की तरह लग जाता है। समाधान योजना उस दंड को मिटाकर "नवीन शुरुआत" का अवसर देती है।

योजना का एक और बड़ा असर ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिल सकता है। कई गांवों में 'किसानों' और घरेलू उपभोक्ताओं के बिजली बिल विवाद का कारण बनते रहे हैं। जब एक तरफ सरकार ब्याज माफ कर उन्हें राहत देती है, तो दूसरी ओर यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिर करने की दिशा में भी मददगार साबित होती है। डॉ. मोहन यादव सरकार की यह पहल इस मायने में भी विशिष्ट है कि यह राजनीति से आगे बढ़कर सहभागिता को जन्म देती है। ऊर्जा विभाग ने जनता से सहयोग की अपील की है और उपभोक्ताओं से आग्रह किया है कि वे इस अवसर का लाभ लें। यह 'सरकार बनाम जनता'

की नहीं, बल्कि 'सरकार और जनता' की साझेदारी का मॉडल है। यदि इसे दीर्घकालिक दृष्टि से देखा जाए, तो समाधान योजना न केवल बिजली वितरण व्यवस्था को सुधार सकती है बल्कि राज्य में आर्थिक अनुशासन की संस्कृति को भी मजबूत करेगी। जब उपभोक्ता समय पर बिल चुकाने लगेंगे और विभाग समय पर सेवा देने लगेगा, तो पारदर्शिता और भरोसे का वह तंत्र बनेगा जो किसी भी जनकल्याणकारी शासन की नींव होता है।

राज्य सरकार की यह नीति दर्शाती है कि विकास केवल नीतियों से नहीं, बल्कि उनके पीछे की संवेदनशील सोच से संभव होता है। डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्य प्रदेश आज उसी दिशा में बढ़ रहा है जहाँ प्रशासनिक निर्णयों के केंद्र में जनता का हित सर्वोपरि है। समाधान योजना उसी यात्रा का एक निर्णायक पड़ाव है, जो आर्थिक राहत के साथ-साथ सामाजिक विश्वास की पुनर्स्थापना का प्रतीक बनकर उभर रही है।

इस योजना में भुगतान के दो विकल्प दिए गए हैं। पहला यदि कोई एक मुश्त भुगतान करता है तो उसे अधिकतम छूट मिलेगी और अगर वह एक साथ अपनी बकाया राशि नहीं चुका सकता तो वह छह किश्तों में भी भुगतान कर सकता है।

इस योजना में घरेलू कृषि, गैर घरेलू और औद्योगिक श्रेणियों के बकाया बिजली बिलों का समाधान किया जा रहा है। योजना का पहला चरण अभी चल रहा है जो 31 दिसंबर तक चलेगा। इसमें 60 से 100 प्रतिशत तक सरचार्ज माफ काया जाएगा। योजना का दूसरा चरण एक जनवरी 2026 से प्रारंभ होगा जिसमें 50 से 90 प्रतिशत सरचार्ज माफ किया जाएगा।

कुर्मी महासभा ने गृह सामग्री (घरेलू बर्तन) वितरित किए

शहापुर (ठाणे): लौह पुरुष महाराष्ट्र श्रमिक कल्याण बोर्ड सरदार वल्लभभाई पटेल की और अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय



150वीं जयंती के अवसर पर, महासभा महाराष्ट्र प्रदेश ने शहापुर तालुका के दो सौ से अधिक गरीब परिवारों को घरेलू बर्तन

में लाभार्थियों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष संजय पाटील और शहापुर तालुका सोशल मीडिया प्रमुख अतुल भोईर द्वारा घरेलू बर्तन वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में अ. भा. कुर्मी क्ष. महासभा के उद्योग महासभा अध्यक्ष समीर पाटील, प्रदेश संरक्षक नरेश आखरे पाटील, सुभाष पाटील, विजय राव, सीताराम पाटील भाई कराळे, जिला महासचिव शेखर भोईर, कोमल चौधरी, जागृति भरे आदि पदाधिकारियों का

सहयोग रहा। कार्यक्रम में लाभार्थी श्रमिकों को विभिन्न घरेलू सामान वितरित किए गए। इस पहल से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को मदद मिली है और लाभार्थी परिवारों ने अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा के प्रति आभार व्यक्त किया। उपस्थित गणमान्यों ने कुर्मी महासभा की सामाजिक पहल की भी सराहना की। और कार्यक्रम का संचालन महासभा के महासचिव जयेश शेलार पाटील ने किया इस अवसर पर संजय पाटील ने सभी से सरदार पटेल के आदर्शों का अनुसरण करते हुए सामाजिक कल्याणकारी कार्यों में भाग लेने की अपील की।

कहानी— यादों की छांव में

पुणे रेलवे स्टेशन के वेटिंग रूम में रमन बैठा था। वह एक मीटिंग से वापस लौट रहा था। बाहर बारिश की हल्की हल्की बूंदें गिर रही थी। तभी दरवाजा खुला और एक औरत ने प्रवेश किया। रमन ने उसकी तरफ देखा।

जाना पहचाना चेहरा और वो ही आंखें बस समय ने कुछ रेखाएं खींच दी थी। और उस औरत को देखते ही रमन के होठों पर नाम उभरा था। नीरा.....

“रमन तुम ?” अपना नाम सुनकर नीरा एक क्षण को ठिठकी फिर उसे पहचानते हुए बोली।

दोनों एक पल ऐसे ही एक दूसरे को देखते रहे और तीस साल पहले का अतीत उनकी आंखों के सामने घूम गया।

कॉलेज की कैटीन। उस दिन भी हमेशा की तरह चहल पहल भरी थी। हवा में उबलती चाय की महक थी। दीवारों पर पुराने पोस्टरों की रंगहीन छाया और मेजों पर चाय के प्यालों के बीच रखी किताबें।

रमन कैटीन में एक कोने में बैठा था, अपने में खोया। उसके सामने रखे चाय के कप से उठती भाप धीरे धीरे गायब हो रही थी। समय की तरह जो कभी ठहरता नहीं। वह पढ़ाई कर रहा था और नौकरी के सपनों में डूबा था। फिर भी मन किसी अनजानी बेचैनी से भरा था। मानो कुछ अधूरा हो, अनकहा जो भीतर ही भीतर दस्तक दे रहा था।

उसी समय एक छरहरे शरीर की लड़की ने कैटीन में प्रवेश किया। हल्के नीले रंग का सलवार सूट, कंधे पर किताबों का थैला और चेहरे पर एक अजीब सी शांति। उसकी आँखों में

आत्मविश्वास था और होठों पर मुस्कान की झिलमिलाहट उसने नजरें घुमाकर चारों ओर देखा, फिर रमन की मेज के पास आकर धीमे स्वर में पूछा—

“क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ?, रमन ने सकुचाकर कहा— “क्यों नहीं, जरूर।”

और कुछ देर तक दोनों के बीच मौन छाया रहा उस मौन को तोड़ने की पहल उस लड़की ने की, “तुम्हारा नाम?”

“रमन” वह बोला, “और तुम्हारा?”

“नीरा।” उस दिन दोनों का परिचय हुआ। नीरा समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर कर रही थी और रमन व्यापार प्रबंधन में। उन दोनों के उद्देश्य अलग जरूर थे, लेकिन जीवन के प्रति जिज्ञासा एक सी।

उस दिन दोनों के बीच कोई खास बात नहीं हुई, पर दोनों के बीच एक न दिखाई देने वाली डोर बंध गयी।

धीरे धीरे उन दोनों की मुलाकातें बढ़ी।

कभी वे लाइब्रेरी में, कभी कॉलेज के गार्डन में, कभी कैटीन में, कभी शहर के किसी कैफे या गार्डन में.....

वे बातों से अधिक खामोशियों से जुड़ते थे। नीरा के विचारों की गहराई उसे आकर्षित करती थी। उसकी बातें किताबों जैसी लगती, गम्भीर पर दिल में उतर जाने वाली।

और समय गुजर जाने के बाद रमन को महसूस होने लगा कि यह दोस्ती नहीं कुछ और है। नीरा की मुस्कान, उसका बोलने का ढंग, उसकी दृष्टि—सब उसे खींचते जा रहे थे। रात दिन उसकी सोच में बस नीरा

ही रहती। वह जान चुका था कि यह प्रेम है, और अब वह इसे शब्द देना चाहता था, पर वह हिचक भी रहा था। मन में उसके डर था कहीं यह स्वीकारोक्ति उस निर्मल सम्बन्ध को तोड़ न दे। और धीरे धीरे न जाने कब समय गुजर गया, पता ही न चला। कॉलेज का अंतिम सप्ताह, सभी अपनी अपनी दिशा में जाने की तैयारी कर रहे थे।

उसी शाम जब कॉलेज गार्डन के बरगद के पेड़ के नीचे, जब सूरज ढलने को था और आसमान में सुनहरी छाया फैल रही थी। नीरा और रमन उस पेड़ के नीचे बैठे थे। तब रमन ने साहस जुटाया और बोला, “नीरा, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।”

नीरा ने चिर परिचित मुस्कान के साथ स्वीकृति की नजरों से उसकी ओर देखा।

रमन ने धीमे स्वर में कहा, “मुझे तुमसे प्यार हो गया है। मैं तुम्हें अपनी जीवन संगिनी बनाना चाहता हूँ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।”

रमन की बात सुनकर कुछ क्षण तक नीरा के चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरा। हवा भी जैसे थम सी गयी थी। फिर उसने बहुत शांत स्वर में कहा, “रमन मैं अभी शादी के बारे में नहीं सोच रही। मुझे अभी अपने जीवन को समझना है, खुद को तलाशना है मैं अपने सपनों को अकेले ही पूरा करना चाहती हूँ।”

उसके शब्दों में कोई कठोरता नहीं, बस एक निश्चय, दृढ़ता थी जो रमन के दिल में गूँजती रही।

उस दिन देर तक दोनों बैठे रहे पर फिर कुछ बोले नहीं। फिर नीरा उठी और बिना पीछे

देखे चली गई।

कॉलेज खत्म हुआ और जिंदगी की राहें अलग अलग हो गई।

और तीस साल का लंबा अंतराल।

रमन और नीरा के शरीर में काफी बदलाव आ गए थे। दोनों का जब आमना सामना हुआ तो वे दोनों ही आश्चर्यचकित थे। उन्हें विश्वास ही नहीं था कि कभी फिर उनकी मुलाकात होगी भी।

नीरा ने रमन को देखा और मुस्करा दी, वही चिर परिचित मुस्कान। दोनों कुछ पल यूँ ही देखते रहे मानों तीस वर्ष पिघलकर उसी क्षण में सिमट गए हो।

फिर दोनों में बातचीत होने लगी।

कॉलेज के दिनों की, प्रोफेसरों की, साथियों की और उन दिनों के छोटे छोटे प्रसंग याद करने लगे। फिर नीरा ने अचानक पूछा, “आजकल कहाँ हो, क्या काम कर रहे हो?”

“मुम्बई में बैंक में मैनेजर हूँ, रमन अपने बारे में बताते हुए बोला, “और तुम?”

“बिलासपुर में संस्था चलाती हूँ, आदिवासी लड़कियों और महिलाओं के लिए काम करती हूँ।” अपने बारे में बताते हुए नीरा बोली, “तुम यहाँ कैसे?”

“यहाँ पर एक सेमिनार था, उसी में आया था, रमन बोला, “और तुम?”

“मैं भी यहाँ एक कार्यक्रम में आयी थी।”

और वे बातें करते रहे और फिर बात आई उस प्रश्न पर जो कभी अधूरा रह गया था। रमन ने पूछा, “शादी की?”

नीरा ने सिर झुका लिया, “नहीं।”

फिर हल्के से मुस्कराई, “और तुमने?”

रमन ने भी कहा, “नहीं।”

नीरा ने चौंकते हुए उसे देखा, “क्यों?”, रमन ने गहरी सांस ली “क्योंकि तुमने मना कर दिया था।”

“मैंने मना कर दिया था तो क्या, किसी और से कर लेते।”

“प्यार तो तुमसे हुआ था, रमन बोला, “मेरे दिल में तुम बसी थी किसी और को कैसे बसा लेता।”

नीरा की आँखों में नमी उतर आई, फिर कहा, “काश मैं उस समय तुम्हारे दिल की बात समझ पाती। मैं शायद डर गई थी। दुनिया से, खुद से और रिश्ते की जिम्मेदारी से। मैं बस भागती रही।” तभी ट्रेन आने की उद्घोषणा हुई। नीरा का चेहरा शांत था, पर आँखें बोल रही थी। बहुत कुछ जो शब्दों में नहीं था। वह उठी, बैग कंधे पर लटकाया और दरवाजे की तरफ बढ़ी। फिर अचानक पलटी और बोली—“रमन, कुछ प्रेम कहानियाँ पूरी नहीं होती क्योंकि अगर पूरी हो जाये तो इतनी खूबसूरत न लगे।”



(किशन लाल शर्मा)
विनायक फीचर्स

आचार्य चौबे महाराज महोत्सव में सितारा देवी की जयंती पर नृत्य – संगीत समारोह संपन्न हुआ

मुंबई। जयन्ती मूवी और कलाकृति केंद्र मुम्बई के तत्वावधान में आचार्य चौबे महाराज के 31 वें महोत्सव को महामहोत्सव रूप में मनाया गया। यह आयोजन नृत्य सम्राज्ञी पद्मश्री सितारा देवी की 105वीं जयंती के उपलक्ष्य में मुंबई के अंधेरी पश्चिम स्थित रंगलीला थियेटर में मनाया गया। कार्यक्रम में जयन्ती माला मिश्राचार्य, सुखदेव महाराज बनारस घराने की शिष्या नुपुर भार्गव तथा उनकी कथा मंडली की ओर से कथक नृत्य की मनोहर प्रस्तुति दी गई। इसके साथ ही बनारस घराने के अंशुमान महाराज के सरोद वादन का प्रस्तुती हुआ। जयंती माला मिश्रा ने भी कथक



नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संगीत जगत के प्रसिद्ध संगीतकार, निर्देशक और गायक रंजीत बारोट उपस्थित थे। रंजीत बारोट भारतीय फिल्म संगीत जगत में विख्यात हैं और लंबे समय से

एक आर रहमान के साथ कार्यरत हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा में बनारस घराने की पारंपरिक नृत्य शैली, संगीत की समृद्ध विरासत और गुरु परंपरा भावपूर्ण समावेश किया गया है। कार्यक्रम का

उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की अमर परंपरा को नव युवाओं तक पहुंचाना है और आचार्य चौबे महाराज तथा पद्मश्री सितारा देवी समान महागुरुवरों को नमन करना भी

है। कार्यक्रम का कुशल संचालन राजेश मिश्रा ने किया। सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सभी कलाकारों को पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

व्यंग्य— साबित कीजिए कि आप जिंदा हैं

हर साल नवंबर आते ही ठंड से ज्यादा ठिठुरन सरकारी आदेशों से लगती है। पेंशनर घरों से बाहर निकलते हैं, क्योंकि साबित करना होता कि वे जिंदा हैं! बैंक कह रहा होता है कि, "अगर आप वास्तव में मर नहीं गए हैं, तो फिंगरप्रिंट देकर दिखाइए।"

आदमी को मरने के बाद शांति मिलती है या नहीं, पता नहीं, पर पेंशन लेना हो तो जिंदा होने का प्रमाण देना पड़ता है।

बैंक के दरवाजे पर लंबी लाइनें हैं। एक ओर बुजुर्ग अपने झुके हुए शरीर को सीधा करने की कोशिश में हैं, तो दूसरी ओर मशीनें हैं जो कह रही हैं, "फिंगरप्रिंट मैच नहीं हुआ।" मशीन को क्या पता, इन हाथों ने कभी देश बनाया था! अब वही हाथ तकनीक के आगे बार बार जिंदा होते हुए भी, जीवन प्रमाण पत्र के लिए अपात्र घोषित हो जाते हैं। सामने बैठा युवा क्लर्क कहता है कृ "सर, मशीन आपको पहचान नहीं रही।" बुजुर्ग मुस्कराकर कहते हैं, "बेटा, मशीन तो क्या, अब तो अपने बच्चे भी नहीं पहचानते।"

नियम तो नियम है। सरकारी तंत्र में संवेदना की जगह 'सॉफ्टवेयर' है। फाइलें

तो खैर अब डिजिटल हो गई हैं, पर सोच अब भी वही पाषाणयुगीन है। बैंक वाला, अधिकारी, कंप्यूटर सब एक स्वर में कहते हैं "जीवन प्रमाण पत्र दो, तभी पेंशन जारी रह सकेगी।" जीवन प्रमाण न हुआ वार्षिक टेंडर हो गया, जो हर साल रिन्यू होता है।

पर सोचिए, क्या वाकई केवल पेंशनर ही जिंदा होने का प्रमाण दे रहे हैं? पूरा देश तो रोज साबित कर रहा है कि वह अब भी किसी न किसी तरह सांस ले रहा है। नौकरी वाला रोज बॉस के सामने रिपोर्ट देकर सिद्ध करता है कि वह 'कार्यशील' है। गृहिणी पूरे परिवार के लिए रसोई में खड़े होकर हर सुबह यह प्रमाण देती है कि वह 'कर्तव्यनिष्ठ' है। छात्र हर परीक्षा में यह साबित करता है कि वह 'भविष्य' है। और सोशल मीडिया पर सक्रिय जन रोजाना एक नई फोटो डालकर लगातार यह सिद्ध करते रहते हैं कि वे 'जीवित' हैं। यानी अब जीवन की सबसे बड़ी कसौटी यही है, प्रूफ ऑफ एक्जिस्टेंस!

वो जमाना गया जब आदमी अपनी आत्मा की आवाज पर जीता था। अब तो जीना भी पासवर्ड से लॉगिन होकर ही शुरू होता है। जो ऑनलाइन है, वही जिंदा है। जिसने दो दिन तक मैसेज का जवाब नहीं

दिया, उसके लिए लोग शोकसभा जैसा भाव प्रकट करने लगते हैं "भाई, कहाँ गायब हो?" अब आदमी शरीर से नहीं, नेटवर्क से जिंदा माना जाता है।

शहरों में जिंदा रहना भी एक कला बन गया है। कोई ईएमआई भरते-भरते आधा मर चुका है, कोई प्रमोशन की दौड़ में बाकी आधा। कोई रिश्तों को 'म्यूट' पर रखे हुए है, कोई भावनाओं को 'आर्काइव' कर चुका है। चेहरे मुस्कुराते हैं, दिल सोता है। और फिर हम सब कहते हैं "हाँ, हम जिंदा हैं।"

पर असली सवाल यह है कि जिंदा कौन है? वह जो सरकारी फाइल में मौजूद है या वह जो अपने भीतर की आग को अब भी जलाए हुए है? कोई पेंशनर लाइन में खड़ा हो सकता है पर भीतर से मरा नहीं है। वहीं, कोई युवा पाँच सितारा दफ्तर में बैठा है पर अंदर से समझौते की जिंदगी जीते जीते सड़ चुका है। सरकार का जीवन प्रमाण पत्र मशीन से मिलता है, आत्मा का जीवन प्रमाण पत्र अंतरात्मा से। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले वाले के लिए अंगूठा चाहिए, दूसरे के लिए साहस।

यह सब देखकर कभी-कभी लगता है कि हमारा सिस्टम आत्माओं का मुर्दाघर बन गया है। यहाँ सिर्फ वही जिंदा माना

जाता है जो नियमों से मेल खाता है। जो सवाल पूछे, जो सोचने की हिम्मत करे, उसे 'नॉन-कॉम्प्लायंट' घोषित कर दिया जाता है। आदमी की जीवंतता का अर्थ अब सिर्फ यह है कि वह विरोध न करे, बस लाइन में लगा रहे। वोट देता रहे, हाँ में हाँ मिलाए और भीड़ के साथ भागता रहे।

कहने को सब जिंदा हैं, पर जिंदगी का स्वाद किसी के पास नहीं। किसी ने नौकरी के नाम पर नींद बेच दी, किसी ने आत्मसम्मान। हर कोई सांस ले रहा है, पर जी नहीं रहा। कोई जीने की कोशिश करता है तो समाज कहता है, "इतना एक्टिव क्यों है?" और अगर कोई चुप रहे तो पूछा जाता है "इतना सुस्त क्यों है?" यानी हर हालत में तुम्हें यह साबित करते रहना है कि तुम 'समाज की तरह से जिंदा' हो।

इस सबके बीच पेंशनर का अंगूठा पहचानने में मशीन असफल होती है, आँखें ब्लिंक करवाई जाती हैं पर कंटेरेक्ट के आपरेशन के चलते मशीन पुतली को भी नहीं पहचानती और यही दृश्य हमारे पूरे समाज का पहचान प्रतीक बन जाता है। मशीनें अब इंसान को नहीं पहचानती, और इंसान खुद को पहचानने की स्थिति में बचा नहीं है।

तो जब इस नवंबर में बैंक वाले आपसे कहें कि "साबित कीजिए कि जिंदा हैं," तो जरा मुस्कराइए और सोचिए, सच में कौन जिंदा है? वो जो ठंड में कांपते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, या वो जो आरामकुर्सी में बैठकर दूसरों की फाइलें रोक रहा है?

असल जीवन प्रमाण पत्र वो नहीं है जो बैंक की मशीन दे, बल्कि वो है जो इंसान खुद अपने भीतर महसूस करे। बाकी तो हम सब बस सरकारी रिकॉर्ड में जिंदा हैं, जीवन में जिंदगी की तलाश में शायद नहीं। तो अब कुछ तो ऐसा करें जिससे साबित हो की हाँ आप जिंदा हैं।



(विवेक रंजन श्रीवास्तव)
विभूति फीचर्स

मुंबई होलसेल होजियरी मर्चेन्ट एसोसिएशन का वार्षिकोत्सव सम्पन्न



मुंबई। मुंबई होलसेल होजियरी मर्चेन्ट्स एसोसिएशन ने माटुंगा स्थिति एसएनडीटी महिला विद्यालय के सभागार में बड़ी धूमधाम से अपना वार्षिकोत्सव मनाया जिसमें भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर एक अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें हास्य सम्राट सुरेश मिश्र के संचालन में लाफ्टर चैंपियन फेम गौरव

शर्मा, मंदसौर एमपी से पधारे मुन्ना बैटरी व बालाघाट की सुश्री



माधुरी किरण ने श्रोताओं को

लोटपोट कर दिया। वार्षिकोत्सव में संस्था के अध्यक्ष मोतीमणि

कोषाध्यक्ष मुकेश जैन ने व्यवसाई पन्नालाल जैन को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड देकर सम्मानित किया। उद्योगपति तंग राजन जी का विशेष सम्मान किया गया। सम्मान समारोह का संचालन निखिल पाठक ने किया। अंत में मोतीमणि सिंह ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी देते हुए सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

ज्ञान सरोवर (हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा
नवभारत प्रेस लि. नवभारत
भवन, प्लॉट नं.13, सेक्टर-8,
सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई
400706 (एम.एस.) से मुद्रित
तथा 11 गोकुलेश सोसायटी,
पंडित मदन मोहन मालवीय
रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई
400080 (एम.एस.) से
प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0- 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित
समाचारों/लेखों में लेखकों तथा
संवाददाताओं के अपने विचार हैं।
किसी भी लेख/समाचार की
जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं
होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी खबर सच्ची